fgnh

fgnh

d{kk 1 – 5

भाषा एक औजार है जिसका इस्तेमाल हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन–जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। यह सब करने के लिए जाँच–पड़ताल, तर्क, संप्रेषण जैसे कौशलों की जरूरत होती है। इसके साथ–साथ भाषा यानी बहुभाषिकता हमारी पहचान भी है और हमारी सभ्यता व संस्कृति का अभिन्न अंग भी। इसलिए यह आवश्यक है कि हिंदी सीखने–सिखाने का दायरा इतना व्यापक हो कि भाषा के इन उपयोगों से उसका नाता न टूटे। इससे आगे बढ़ें तो हम पाएँगे कि भाषा हमें अपने परिवेश में कई रूपों में बिखरी मिलती है, जैसे– अखबार, साइनबोर्ड, पोस्टर, विज्ञापन आदि। इसके अतिरिक्त भाषा अपने साहित्यिक रूप में भी उपलब्ध होती है। ऐसे में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्कूल के दस–बारह वर्षों के दौरान विद्यार्थियों में हिंदी के व्यापक और विविध स्वरूप की गहरी समझ विकसित हो जाए।

Kku dk foLrkj

स्कूली शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी का भाषा–बोध और साहित्य–बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि उसमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास पैदा हो सके। वह पाठ्यपुस्तकों की परिधि के बाहर भी किसी रचना से जुड़कर उस पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सके। वह तरह–तरह के औपचारिक व अनौपचारिक विषयक्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा के रूपों से परिचित हो और उसका प्रयोग कर सके। वह संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न किस्म की शैलियों से परिचित हो सके। विद्यार्थियों को भाषा की ताकत का अहसास हो। वह इस बात को समझें कि भाषा के माध्यम से हम केवल संप्रेषण ही नहीं करते, बल्कि जो हम सोचते और महसूस करते हैं उसे सुंदर, प्रभावशाली व्यंजनात्मक और पैने ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है। विद्यार्थी हिंदी की बारीकी और सुंदरता को परख सके। उसे यह ज्ञान हो कि हिंदी के माध्यम से यथार्थ और काल्पनिक दुनिया की रचना की जा सकती है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी का ज्ञानक्षेत्र इतना विस्तृत हो कि वह राष्ट्रीय समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की परिधि में आने वाले व्यक्ति, परिवेश और समाज से जुड़े मुद्दों की सामान्य जानकारी रख सके।

dk'kyk dk foLrkj

दस–बारह वर्ष तक स्कूल में हिंदी पढ़ने के बाद हिंदी पर विद्यार्थियों की पकड़ इतनी मज़बूत हो जाए कि वे कुशल पाठक, लेखक, श्रोता व विश्लेषक हों। वे अख़बारों के संपादकीय पृष्ठ और पत्रिकाएँ बिना कठिनाई के पढ़ और समझ पाएँ और उन पर टिप्पणी कर पाएँ। वे आवश्यकता और उद्देश्यों के अनुसार किसी किताब, लेख आदि में से उपयुक्त सामग्री इकट्ठा करके उसका सटीक उपयोग कर सकें। वे रेडियो–टेलीविज़न पर हिंदी में प्रसारित होने वाली औपचारिक परिचर्चाओं व भाषणों को सुनकर समझ सकें।

विद्यार्थियों में बोलने का कौशल इस सीमा तक विकसित हो चुका हो कि औपचारिक चर्चाओं व वाद–विवाद में बेझिझक होकर बोल सकें। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और असरदार ढंग से अभिव्यक्त कर सकें। भाषा पर उनका इतना अधिकार हो चुका हो कि वे जीवन की विविध स्थितियों

से आत्मविश्वासपूर्वक गुजर सकें। विभिन्न प्रकार के औपचारिक व अनौपचारिक संदर्भों के अनुसार विद्यार्थियों में उचित शैली चुन सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से क़िस्म–क़िस्म का लेखन कर सकें। भाषा को जानदार बनाने के लिए उर्दू के और आंचलिक शब्दों का इस्तेमाल करने की समझ उनमें हो। पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना–इन चारों प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ।

- कही या लिखी गई बात को आँख मूँदकर स्वीकार करने की बजाय विद्यार्थी उसे आलोचनात्मक दृष्टि से परखें और उस पर प्रासंगिक सवाल उठाएँ।
- विद्यार्थियों के तार्किक कौशल इतने विकसित हों कि वे दो बातों के बीच के अंतस्संबंध को समझ सकें तथा अपने द्वारा कही या लिखी गई बात की तर्क से पुष्टि कर सकें।
- विद्यार्थियों में अवलोकन और विश्लेषण के कौशलों का भरपूर विकास हो चुका हो। वे चीजों, स्थितियों, लोगों, परिवेश और मनोभावों का बारीक और विश्लेषणात्मक वर्णन कर सकें। इन कौशलों की मदद से विद्यार्थी भाषा की नियमबद्धता को भी पहचान पाएँ। साथ ही साथ परिवेश और समाज के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक विश्लेषण कर पाएँ।

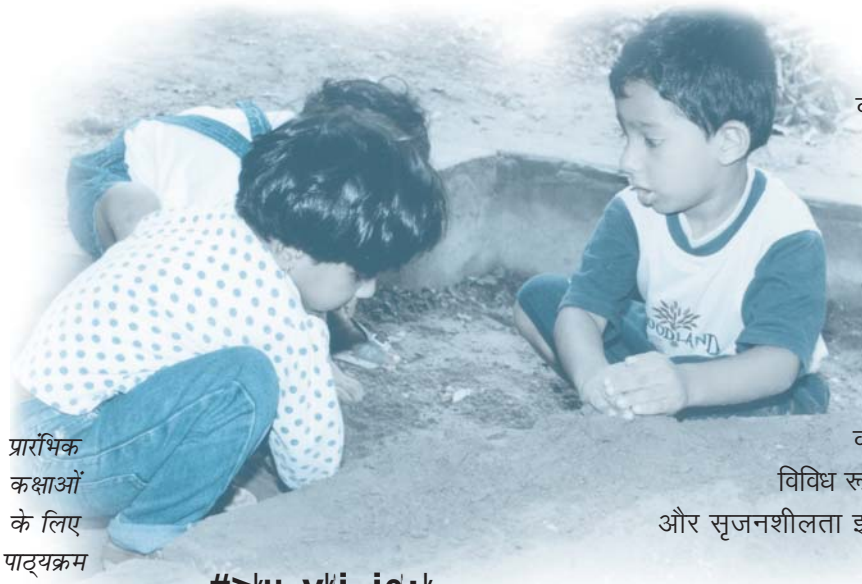

- भाषा, कला और सृजनात्मकता व कल्पनाशीलता का गहरा संबंध है। विद्यार्थियों का दस–बारह वर्षों तक हिंदी के साथ संपर्क उनमें कलाबोध विकसित करे और वे आसपास बिखरी कला को उसके विविध रूपों में सराह सकें। उनके काम में कलात्मकता और सृजनशीलता झलके।

#>ku vkj jo;k

स्कूली शिक्षा पूरी करने तक विद्यार्थी हिंदी से गहरी आत्मीयता महसूस करने लगे। साथ ही बाकी भारतीय भाषाओं की विविधता को स्वीकार करें और उनके समृद्ध साहित्य को सराहना की दृष्टि से देखें। भाषा विद्यार्थी के निर्भय व्यक्तित्व की रचना कर सके। बोलियों के प्रति विद्यार्थियों की सोच, संकीर्ण न हो और वे अच्छी तरह समझें कि भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा और बोली में कोई अंतर नहीं है। यह अंतर केवल सामाजिक और राजनैतिक है। भारत की समृद्ध संस्कृतियों और रिवाजों के प्रति उनका रवैया पूर्वाग्रहों से मुक्त और सराहनापूर्ण हो। अल्पसंख्यक जातियों व समाजों के प्रति वे संवेदनशील हों और लैंगिक समता उनके सोच एवं व्यवहार दोनों में झलकती हो। क्षमताओं का कोई एक मापदंड नहीं होता और लोगों में क्षमताओं के विविध रूप हो सकते हैं– इस बात को विद्यार्थी अच्छी तरह समझें, स्वीकारें और सराहें। विद्यार्थी भाषा और सत्ता के अंतस्संबंध से परिचित हों ताकि वे स्वयं भाषा को (जाति और लिंग के संदर्भ में) प्रभुत्व और शोषण के हथियार के रूप में इस्तेमाल न करें, न ही उसका ऐसा इस्तेमाल होने दें।

ikB;iLrd

उपर्युक्त बातों के संदर्भ में बहुत ज़रूरी है कि भाषा–शिक्षण की पद्धतियों और पाठ्यपुस्तकों व शिक्षण सामग्री में इन विचारों की झलक और समझ मिले। यद्यपि पाठ्यपुस्तकें भाषा–शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होनी चाहिए फिर भी पाठ्यपुस्तकें हमारी स्कूली शिक्षा में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः उनमें संकलित

रचनाएँ व अभ्यास ऐसे हों कि अपेक्षित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोणों, कौशलों और रवैये को बनाने, सँवारने में उनकी भागीदारी हो। ये पुस्तकें साधन के रूप में भाषा की ताकत को निरंतर, कक्षा–दर–कक्षा पैना करती रहें ताकि विद्यार्थी विविध परिस्थितियों एवं आवश्यकता के अनुसार उसका उपयोग करने में सक्षम हों।

- इन पुस्तकों में कथात्मक और जानकारीपरक रचनाओं की विविधता हो जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के साहित्य का परिचय मिल सके और वे ऐसी अन्य रचनाओं को समझ व सराह सकें। साथ ही साथ वे रचनाओं को आत्मसात करते हुए उन पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें।
- किसी भी विषय का अस्तित्व शून्य में विकसित नहीं होता है, इसलिए यह जरूरी है कि विद्यार्थी कोई रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उसे जोड़ पाएँ और उन दोनों का अंतर्संबंध देख सकें। पाठ्यपुस्तकों में कहानी, कविता, संस्मरण आदि जैसी प्रचलित विधाएँ तो हों ही, इसके अतिरिक्त अख़बारी लेखन, पैरोडी, विज्ञापन, नारे, कार्टून, संदेश, भाषण, भेंटवार्ता, घोषणाएँ, रहस्य–रोमांस जैसी सामग्री का भी समावेश हो। चुनी गई रचनाओं में कम से कम बीस प्रतिशत रचनाएँ अन्य भारतीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं की हों।
- इन पुस्तकों में विषयवस्तु का फलक विस्तृत हो जिसमें समाज के सरोकार झलकते हों, जैसे– पर्यावरण/परिवेश, संवैधानिक दायित्व, शांति, संस्कृति (सिनेमा, मंचन कलाएँ, खान–पान पहनावा, त्योहार आदि), विज्ञान, इतिहास आदि।
- इन विषयवस्तुओं के जरिये भाषा के विभिन्न प्रयोगों की बानगी और भाषा की आँचलिक और साहित्यिक छटा के वैविध्य का परिचय भी हो ताकि विद्यार्थी उसकी बारीकी, सौंदर्य और आँचलिकता की सराहना कर सके और उसकी समालोचना कर सके।
- रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न विषयों से जुड़े भाषा–प्रयोग और शैलियों से परिचित हो सकें।
- पाठ्यपुस्तकों में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और अभ्यास। प्रश्न उनको परखने, उनसे गहराई से जुड़ने और व्यापक अनुभव–स्तर से तादात्म्य का मौका देते हैं। परखना, विश्लेषण, आलोचना आदि के लिए जिन कौशलों की आवश्यकता होती है इन अभ्यासों के माध्यम से उनके अवसर मिलते हैं। भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करने और सराहने की संवेदनशीलता अभ्यास–प्रश्नों के ज़रिये विकसित की जा सकती है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों में विविध विषयों के संदर्भ में परिवेश और समाज के अवलोकन और बारीक विवरण से संबंधित प्रश्न भी होने चाहिए। चूँकि कक्षा में कक्षा से बाहर की भाषा का विश्लेषण भाषा के विकास का सशक्त साधन है, इसलिए ऐसे प्रश्न भाषा के संदर्भ में भी दिए जा सकते हैं ताकि विद्यार्थी भाषा की संरचना की पड़ताल और विश्लेषण कर पाएँ। यह विश्लेषण कक्षा के बहुभाषी संदर्भ में भी किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रश्नों के ज़रिए, किसी रचना, विषय आदि को अनेक पहलुओं से देखने की सम्यक् दृष्टि विकसित की जाए।
- कक्षा 9 और 10 मातृभाषा, द्वितीय भाषा और कक्षा 11 और 12 (आधार) में व्यावहारिक व्याकरण की एक संक्षिप्त पुस्तक तैयार की जा सकती है जो आदेशात्मक और वर्णनात्मक न होकर विश्लेष्णात्मक हो। यह पुस्तक अध्यापकों के लिए होगी।

0;kdj.k

बच्चों की भाषा में इस बात के पर्याप्त संकेत मिलते हैं कि वे अपनी भाषा का व्याकरण अच्छी तरह जानते हैं। पर व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को उसके विभिन्न पक्षों की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास। प्रश्न और कक्षा में शिक्षक द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली व्यावहारिक गतिविधियाँ और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। व्याकरण के पक्षों की समझ चरणबद्ध क्रम में विकसित की जा सकती है : पहला चरण पहचान का है और दूसरा चरण प्रयोग का है।

mnkgj.k 1 कक्षा 3 में नाम वाले शब्दों के बारे में बच्चों को पाठ और कक्षा के परिवेश के संदर्भ में (जैसे, किताब, रोटी, मेज, पंखा, रसीद, रिबन, जूता, दीवार, छत आदि) बताया जा सकता है। कक्षा 4 में बच्चे ऐसे शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकते हैं या किसी बच्चे द्वारा बनाई गई कहानी। घटना आदि में नाम वाले शब्द ढूँढ़ सकते हैं। कक्षा 5 में नाम वाले शब्दों को संज्ञा का नाम दिया जा सकता है और कक्षा 6 में बच्चों को संज्ञा के भेदों के बारे में बताया जा सकता है।

mnkgj.k 2 पाठ्यपुस्तक के अभ्यास–प्रश्नों में या कक्षा में शिक्षक द्वारा एक प्रकार के शब्दों की सूची दी जा सकती है जिसका अवलोकन करके बच्चे उनमें होने वाले बदलावों को पहचान सकते हैं– (एक) गेंद– (तीन) गेंदे – (एक) गिलास– (पाँच) गिलासों (एक) सड़क– (कई) सड़कें– (एक) भैंस – (कई) भैंसें। बच्चों द्वारा इन परिवर्तनों को पकड़ पाना भाषा के नियमबद्ध स्वरूप को समझ पाने की दिशा में पहला कदम है।

पाठ्यक्रम में कक्षानुसार व्याकरण के कुछ बिंदु दिए गए हैं। इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक निर्माता और शिक्षक पाठ में सहज रूप से उभरकर आने वाले व्याकरण संबंधी और भाषा की बारीकी व सुंदरता संबंधी अन्य पक्षों को क्रमशः समझने और सराहने में छात्र–छात्राओं की सहायता करें। एक कक्षा में चर्चित बिंदुओं की चर्चा दूसरी कक्षाओं में भी जारी रह सकती हैं। ऊपर की पंक्तियों में चर्चित उदाहरणों के अलावा कई गतिविधियों और युक्तियों को भी प्रयोग में लाया जा सकता है, जैसे– क्लोज टेस्ट, शब्द–कड़ी, अंत्याक्षरी आदि।

ekr`Hkk"kk d: :i es fgUnh ¼d{kk 1 ls 5½

d{kk 1 ls 2

बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। मातृभाषा बच्चा अपने माता–पिता एवं अन्य परिजनों से सुनकर अनायास ही अनुकरण द्वारा सीख लेता है और उससे उसका सहज संबंध स्थापित हो जाता है। प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। भाषा सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने का एक उत्तम साधन है। भाषा ही बच्चे को समझदार, विचारवान, सभ्य और शिक्षित बनाती है। मातृभाषा में ही बच्चे का मस्तिष्क सबसे पहले क्रियाशील होता है। अतः मातृभाषा बच्चे की पहली उपलब्धि और सहायिका है। यही कारण है कि सभी शिक्षाशास्त्री एकमत हैं कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा में संप्रेषण का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। इसके लाभ शोध द्वारा स्थापित किए जा चुके हैं।

विद्यालय बच्चों के लिए ऐसा स्थान है जो कई दृष्टियों से घर से भिन्न है। विद्यालय के अपने नियम–कायदे हैं। बच्चे कुछ घंटों के लिए अपने परिवार से दूर हो जाते हैं। परंतु बच्चे अपने साथ बहुत

कुछ लेकर विद्यालय आते हैं – अपनी भाषा, अपने अनुभव एवं दुनिया को देखने का अपना दृष्टिकोण आदि। इन्हीं सबका उपयोग करते हुए शिक्षक को बच्चों से आत्मीय संबंध बनाना पड़ता है ताकि विद्यालय के नवीन परिवेश में बच्चे अपनापन अनुभव करें। बच्चों के घर की भाषा और विद्यालय की भाषा के बीच के संबंध को उसकी विविधता एवं लचीलेपन के साथ देखना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे की भाषा अपने आप में पूर्ण होती है इसलिए उसे किसी मापदंड पर आँकना उचित नहीं है।

बच्चे घर–परिवार एवं परिवेश से प्राप्त बोलचाल की भाषा के अनुभवों को लेकर ही विद्यालय आते हैं। पहली बार स्कूल में आने वाला बच्चा शब्दों के अर्थ और उनके प्रभाव से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं, इसलिए पढ़ने का प्रारंभ अर्थ से ही हो और किसी उद्देश्य के लिए हो। यह उद्देश्य कहानी सुनकर, पढ़कर आनंद लेने के रूप में भी हो सकता है। धीरे–धीरे बच्चों में भाषा की लिपि से परिचित होकर अपने परिवेश में उपलब्ध लिखित भाषा को भी पढ़ने समझने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। भाषा शिक्षण की इस प्रक्रिया के मूल में बच्चों के बारे में यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने या जोर जबरदस्ती से नहीं बल्कि बच्चों के स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से होता है। इसलिए बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना जरूरी है जहाँ वे बिना किसी रोक–टोक के अपनी उत्सुकता के अनुसार अपने परिवेश की खोज–बीन कर सकें।

यही अवधारणा बच्चों के भाषिक कौशलों पर भी लागू होती है। स्कूल में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं वह स्कूल में प्रायः स्वीकृत नहीं होती। भाषाशिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग–अलग भाषाई–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का उपयोग करते हुए हिंदी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की महत्ता को समझकर कक्षा में उसका उपयोग करें, तभी वह बच्चों को अपने परिवेश में स्थित सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है। आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

mí';

1. बच्चों में अपने अनुभव और विचार बताने की इच्छा और उत्सुकता जगाना;
   - बच्चे स्कूल के वातावरण में अपनापन महसूस करें।
   - वे घर की भाषा और स्कूल की भाषा में आपसी संबंध बनाते हुए उसको विस्तार दे सकें।
   - बच्चों को प्रश्न पूछने, अपनी बात कहने का भरपूर मौका मिले।
2. बच्चों में दूसरों की बात सुनने में रुचि और धैर्य पैदा करना, उनसे सुनी बात पर टिप्पणी दे पाना;
3. बच्चे द्वारा अक्षर जोड़कर पढ़ने की बजाय समझकर पढ़ना;
   - परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों और छपी हुई सामग्री से परिचित होने के कारण बच्चा अनुमान से पढ़ने का प्रयास कर सकेगा।
4. बच्चों द्वारा अपनी दुनिया तथा अपने पूर्वज्ञान की मदद से पाठ्यसामग्री और स्कूली परिवेश में उपलब्ध लिखित सामग्री से अर्थ ग्रहण करना, जैसे –
   - पढ़ने की प्रक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) ज़रूरतों से जोड़ना, जैसे–कक्षा और स्कूल में अपना नाम, अपनी मनपसंद पाठ्यसामग्री और पाठ्यपुस्तक का नाम पढ़ना।

- परिवेश में उपलब्ध छपी हुई सामग्री (चित्र और शब्द) को देखकर बच्चे संदर्भ से परिचित होने के कारण अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कर सकते हैं।

5. सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं से अपने अनुभव जोड़ पाना और उसके बारे में बात करना।
   - बच्चे अपने अनुभव संसार और काल्पनिक संसार में बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्ति कर सकें।
   - सुनी हुई कहानियों को अपने शब्दों और अपने अंदाज में दूसरों को सुना सकें।
6. चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना
   - बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार का रेखांकन कर सकते हैं।
7. लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास कर सकें।

ikB;Øe

पहली और दूसरी कक्षा में एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। रचनाओं के चयन में इन बातों का ध्यान रखा जाएगा कि वे रोचक और बच्चों के अपने परिवेश से जुड़ी हुई हों। उनमें पर्यावरण संबंधी ज्ञान और चिंता समाहित हो। वे लिंग समानता, शांति और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करने वाली हों। कार्य और श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने वाली हों, और कलात्मक दृष्टि निर्मित करने और मूल्य चेतना जगाने में सहायक हों।

प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापकों को संबोधित एक पुस्तक का निर्माण भी किया जा सकता है जिसमें कक्षा में उचित वातावरण निर्माण, विभिन्न भाषायी परिवेश से आए बच्चों से सहज संबंध, विभिन्न भाषाई कौशलों का विकास, पाठ्यसामग्री के उचित उपयोग, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षण युक्तियाँ एवं दृश्य श्रव्य सामग्री के उचित उपयोग एवं मूल्यांकन आदि पर चर्चा होगी।

बच्चों को ध्यान में रखकर आवश्यक दृश्य–श्रव्य सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।

f'k{k.k ;fDr;k

- बच्चों की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाने का शिक्षक का प्रयास भाषा शिक्षण की प्राथमिकता होती है।
- कक्षा में सहज आत्मीय वातावरण निर्मित करने के लिए बच्चों से उनके घर, परिवेश, पसंद–नापसंद, संगी–साथियों के बारे में बातचीत करनी चाहिए ताकि उनकी झिझक खुल सके।
- कक्षा एवं स्कूल में उपलब्ध स्थान का उपयोग अध्यापक को इस प्रकार करना चाहिए कि वह बच्चों के भाषायी विकास के अनुकूल वातावरण निर्मित कर सके।
- कक्षा में दीवारों पर बच्चों द्वारा निर्मित एवं एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं तथा शिक्षक द्वारा एकत्रित चित्रों एवं रचनाओं को इस प्रकार लगाना चाहिए कि बच्चे उसे सरलता से देख सकें। चित्र वार्तालाप एवं लेखन की गतिविधियों के लिए उपयोगी होते हैं।
- कक्षा में भाषा की विविधता के प्रति संवेदनशील बनकर उसका उपयोग भाषा शिक्षण में करना चाहिए। मसलन– भोजपुरी, अवधी, संथाली के शब्दों, मुहावरों, अभिव्यक्तियों का खुलकर प्रयोग करने का अवसर बच्चों को मिलना चाहिए।
- शिक्षण प्रक्रिया को रुचिकर एवं वैविध्यपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण सामग्री विविध स्रोतों से एकत्रित की जानी चाहिए, जैसे– श्रव्य–दृश्य सामग्री, चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं से कतरनें आदि।
- चित्र दिखाकर बच्चों से कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है।
- कहानी सुनाकर बच्चों से सुनी गई कहानी को अपने शब्दों में सुनाने के लिए कह सकते हैं।
- गीत एवं कविता की प्रस्तुति उचित लय एवं हाव–भाव के साथ होनी चाहिए।
- बच्चों में रेखांकन और चित्रांकन के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है।

- चित्र बनाकर उस चित्र के आधार पर बच्चों से चार–पाँच वाक्य लिखने को कहा जा सकता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए।

eY;kdu

मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चों की सीखने की क्षमता का आकलन करना है और सीखने की कठिनाइयों तथा बच्चों की समस्याओं को पहचानना है। विद्यार्थी विशेष की समस्या को पहचान कर उसके अनुसार शिक्षण विधि में सुधार मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण अंग है। पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों का मूल्यांकन पूर्णतया अनौपचारिक एवं अप्रत्यक्ष होना चाहिए तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत् एवं व्यापक। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि मूल्यांकन निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और दायित्वपूर्ण हो। बच्चों की मौलिकता, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता के आंकलन के पर्याप्त अवसर हों।

कक्षा में शिक्षक इस बात का प्रयास करें कि प्रत्येक गतिविधि में बच्चे की सहभागिता हो। जाँच की प्रक्रिया का प्रारंभ एक सतर्क अवलोकन के माध्यम से किया जाना चाहिए जिससे यह पता चल सके कि वह क्या जानते हैं और उन्हें क्या जानने की जरूरत है। शिक्षक उनकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करें, केवल सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का ही नहीं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मूल्यांकन उनकी क्षमता और सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए। इस स्तर पर किसी भी रूप में मौखिक और लिखित औपचारिक परीक्षा न ली जाए।

d{kk 3 l 5

तीसरी कक्षा तक आते–आते बच्चे स्कूल से परिचित हो जाते हैं और वहाँ के वातावरण में घुलमिल जाते हैं। स्कूल का वातावरण और दूसरे बच्चों का साथ उन्हें हिंदी भाषा में निहित स्थानीय, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विविधताओं से परिचित कराता है। इसके अतिरिक्त वे अन्य भाषाओं के प्रति संवेदनशील भी हो जाते हैं।

इस स्तर पर बच्चों की भाषा से जुड़े कौशलों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आएगा। उनमें स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत विकसित होगी। पढ़ी हुई सामग्री से वे संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और उसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकेंगे।

यहाँ तक आते–आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारंभ हो जाता है, और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं।

mís';

1. बच्चों में पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना –
   - पाठ्यपुस्तक की विधाओं से परिचित होना और उससे प्रेरित हो कर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
   - मुख्य बिंदु/विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय–सामग्री की बारीकी से जाँच करना।
   - विषय सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानने की कोशिश करना।
2. पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना
   - दूसरे के विचारों को सुनकर समझना और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकना।
   - दूसरों के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।
   - पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद प्राप्ति में समर्थ बनाना।

- अध्ययन की कुशलता का विकास करना।
- स्वतंत्रता और आत्मविश्वास के साथ लिख पाना।
- मनपसंद विषय का चुनाव कर लिख सकना।
- विषयवस्तु और विचारों के प्रस्तुतीकरण में लेखन की तकनीक का विकास करना।
- दूसरों की अभिव्यक्ति को सुनकर उचित गति से शब्दों एवं वाक्यों को लिख सकना।

3. भाषा को अपने परिवेश और अपने अनुभवों को समझने का माध्यम मानना और उसका सार्थक उपयोग कर सकना।
   - कक्षा में बच्चों को बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना।
   - बच्चों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को विकसित करना।
   - भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास करना।

ikB;lkexh

प्रत्येक कक्षा (3, 4, 5) के लिए एक–एक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की जाएगी। इन पाठ्यपुस्तकों में ही पर्याप्त अभ्यास कार्य शामिल होगा। पुस्तकों की विषय–सामग्री उद्देश्यों और शैक्षिक क्रियाकलापों पर आधारित होगी। सामग्री का चयन कक्षा 1 और 2 में विकसित हुए भाषायी कौशल और विषयों को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों को अतिरिक्त पठन के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

f'k{k.k ;fDr;k

कक्षा एक और दो के लिए सुझाई गई युक्तियों के साथ ही निम्नलिखित क्रियाकलापों का आयोजन भाषा शिक्षण के लिए किया जा सकता है –

- बच्चों की रुचि के अनुसार परिचित विषय या प्रसंग पर चर्चा।
- कहानी, वर्णन, विवरण आदि पर प्रश्न पूछने और उत्तर देने को प्रोत्साहित करें।
- भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ, अभिनय आदि का आयोजन कराया जाए।
- कहानी, नाटक के पात्रों का अभिनय कराया जाए।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक परिस्थितियों में परिचित एवं पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकों से कहानी, कविता ढूँढ़ने तथा सुनाकर पढ़ने के लिए कहना।
- उचित गति एवं प्रवाह के साथ पढ़ने पर बल दें।
- दूसरों की हस्तलिखित सामग्री, पत्र आदि पढ़वाए जा सकते हैं।
- सरल एवं परिचित विषयों पर वाक्य, अनुच्छेद लेखन।
- अनुभव पर आधारित घटना का विवरण लेखन।
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लेखन।
- वर्ग–पहेली भरवाना।
- चित्र दिखाकर उस पर आधारित कविता, कहानी लेखन।
- संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने तथा कठिन शब्दों को शब्दकोश में से देखकर उनके अर्थ समझने का अवसर दिया जाए।
- अधूरी कहानी को पूरी कर सुनाने तथा लिखने को कहा जा सकता है।
- पुस्तकालय समृद्ध करने हेतु प्रयास।

0;kdj.k d fcn

d{kk 3

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में संज्ञा, विशेषण और वचन की पहचान और व्यवहारिक प्रयोग।
- गणित के पाठ्यक्रम के अनुरूप हिंदी में संख्याएं, संयुक्ताक्षरों की पहचान।

d{kk 4

- तरह–तरह के पाठों (पाठ्यपुस्तक के व अन्य) के संदर्भ में और कक्षा के संदर्भ में सर्वनाम और लिंग की पहचान।
- विशेषण का संज्ञा के साथ सुसंगत प्रयोग, वचन का प्रयोग।

d{kk 5

- तरह–तरह के पाठों के संदर्भ में (पाठ्यपुस्तक के एवं अन्य) और कक्षा के संदर्भ में क्रिया, काल और कारक चिह्नों की पहचान।
- शब्दों के संदर्भ में लिंग का प्रयोग।

अभ्यास प्रश्नों के ही माध्यम से बच्चों को व्याकरण सिखाया जाए। इस प्रकार के अभ्यास दिए जाएं जिनसे बच्चे सहज रूप से संज्ञा, सर्वनाम और शब्द व्यवस्था (पर्याय और विलोम– स्तरानुकूल) की जानकारी प्राप्त करें जैसे चाँद के पर्यायवाची शब्दों का अभ्यास कराना हो तो अभ्यास दिया जा सकता है–

चाँद को तुम और क्या–क्या कहते हो?

अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से व्याकरण सीखना बच्चे के लिए नीरस, बोझिल और उबाऊ प्रक्रिया नहीं होगी।

eY;kdu

मूल्यांकन का उपयोग बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है इसीलिए पहली कक्षा से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति ही श्रेष्ठ पद्धति है।

जैसाकि पहले कहा जा चुका है कि पहली और दूसरी कक्षा में मूल्यांकन बच्चों की गतिविधियों के अवलोकन के आधार पर किया जाना चाहिए एवं उन्हें पता भी नहीं होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है।

तीसरी से पाँचवीं कक्षा के मूल्यांकन में थोड़ा बदलाव होगा और इस स्तर पर कुछ औपचारिक मूल्यांकन भी किया जाएगा। यहाँ बच्चों को पता होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है। लेकिन यह प्रक्रिया उनके मन में डर पैदा करने वाली न हो। सत्र में कई बार छोटी–छोटी लिखित और मौखिक परीक्षाएँ ली जाएं न कि एक ही बार।

मूल्यांकन करते समय शिक्षक द्वारा बच्चे की प्रगति की तुलना किसी पूर्व कल्पित मापदंड से न की जाए उनकी प्रगति का लगातार और सूक्ष्म आकलन किया जाए और प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड रखा जाना चाहिए जिसमें शिक्षक को हर सप्ताह या पखवाड़े में प्रत्येक बच्चे की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखनी चाहिए। शिक्षक को बच्चों की विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान रखते हुए उसकी प्रगति की जाँच करनी चाहिए, जैसे–कक्षा में परिचर्चा में भाग लेते हुए, छोटे समूह में काम करते हुए, कापियाँ या दूसरी जगह पर लिखित कार्य करते हुए आदि।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा ज्ञान की उपलब्धि बच्चों का न केवल भाषा विशेष में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है वरन् अन्य विषयों के अध्ययन को भी सार्थक रूप से प्रभावित करती है। अतः मूल्यांकन करते समय निदानात्मक पक्ष पर विशेष ध्यान देना जरूरी होगा और उसके अनुसार उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था उपयुक्त समय पर की जानी चाहिए।